IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.57
Volume 4, Issue 6, November 2024

द्रविड़ राजनीति में रिक्तता:एक विश्लेषण

डॉ॰ गौरव त्रिपाठी

असिस्टेंट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान)

राजकीय पी जी कालेज, मुसाफिरखाना, अमेठी

शोध सार

तमिलनाडु भारत में द्रविड़ राजनीति का केंद्र रहा है ।द्रविड़ राजनीति वास्तव में भारत के दक्षिणी क्षेत्र में प्रचलित रही है। यह पेरियार के संघर्ष की भूमि थी। यहां पर सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए कई प्रकार से संघर्ष किए गए। द्रविड़ राजनीति में अनिश्वरवाद और तर्कवाद को सदैव प्रधानता दी गई है। द्रविड़ राजनीति में सदैव दो धड़े दिखाई पड़ते हैं -चाहे पेरियार का युग हो या चाहे एम जी रामचंद्रन का युग। द्रविड राजनीति के इतिहास में लैंगिक समता का भी दिग्दर्शन होता है। द्रविड़ राजनीति में नेताओं के उभार में फिल्म क्षेत्र प्रमुख रही है। चाहे करुणानिधि हो ,चाहे जे जयललिता हो व चाहे रजनीकांत हों। सभी फिल्म जगत से संबंधित हैं ।करुणानिधि द्रविड़ राजनीति में एक प्रभावशाली नेता रहे। वे हिंदी विरोधी आंदोलन में सदैव अग्रगण्य रहे। बाल काल से ही वे ऐसे आंदोलन में सक्रिय रहे हैं। जब यूपीए का गठन हो रहा था तब करुणानिधि उस मूल विचार के नेताओं में से एक थे। उन में राष्ट्रवाद की भावना अत्यंत प्रबल थी इसलिए जब समाजवादी भावना के अंतर्गत भारतीय बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया तो वह उसके समर्थन में आगे दिखलाई पड़ते हैं। वे लोकतांत्रिक व्यवस्था के संपोषक थे यही कारण है कि जब देश में राष्ट्रीय आपातकाल को क्रियान्वित किया गया तब करुणा निधि ने जयप्रकाश नारायण के साथ मिलकर संपूर्ण क्रांति में अपना योगदान दिया । करुणा निधि का देहावसान राजनीतिक में एक शून्यता की उभार का प्रतीक बन गया है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.57
Volume 4, Issue 6, November 2024

मुख्य शब्द : द्रविड़, राजनीति ,भाषावाद, अलगाववाद, क्षेत्रवाद, अन्नादुरई, सामाजिक न्याय ,अनिश्वरवाद, तर्कवाद ,विवेक, गैर ब्राह्मणवाद , पेरियार ।

ई.वी. रामास्वामी नायकर अर्थात पेरियार के आंदोलन से निकले हुए नेताओं में करुणानिधि की अनुपस्थिति द्रविड़ राजनीति के एक युग के अवसान का बोध कराता है। तमिलनाडु की समस्त राजनीति उसके नेताओं के करिश्माई व्यक्तित्व का आधार द्रविड़ आंदोलन ही था । द्रविड़ आंदोलन की पृष्ठभूमि में केरल के त्रावणकोर के राजा द्वारा मंदिर मार्ग को दलितों हेतु निषेध करना तथा चेरनमादेवी शहर के एक विद्यालय में ब्राह्मण और ग्गैर ब्राह्मण छात्रों के मध्य विभेद करने की घटना रही है । इन दोनों घटनाओं ने परियार को कांग्रेस छोड़कर आत्म स्वाभिमान आंदोलन चलाने हेतु प्रेरित किया। यह आंदोलन जस्टिस पार्टी के साथ मिलकर 1944 में द्रविड़ कड़गम दल के रूप में प्रकट हुआ जो राजनीतिक रहते हुए सामाजिक न्याय और तमिल गौरव पर बल देता है। यह आंदोलन ब्राह्मणवाद के खिलाफ होने के साथ साथ अनिश्वरवादी था। यह आंदोलन तर्कशीलता पर बल देता था । यह किसी भी धार्मिक सत्ता का प्रतिरोध करते हुए वाह्याडंबरों एवं पाखंडों पर कठोर प्रहार करता था। यह आंदोलन द्रविडस्तान के रूप में स्वतंत्र अस्तित्व की मांग करते हुए हिंदी भाषा के विरोध का आंदोलन था।

इसी समय पेरियार के साथी अन्नादूरै के मन में सत्ता प्राप्त की महत्वाकांक्षा हिलोरें मारने लगी। अंततः पेरियार के शिष्य करुणानिधि एवं अन्नादुरई ने द्रविड़ कड़गम से अलग होकर द्रविड़ मुनत्र कड़गम नमक दल का गठन कर लिया जो 1956 में राजनीति में प्रवेश किया।

जब 60 के दशक में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकारने की बात उठी तो करुणानिधि ने उसके विरोध में 55 दिन तक हिंसक आंदोलन चलाया इसके परिणाम स्वरूप सत्ता में गैर कांग्रेसी दल के रूप में डी एम के आयी तथा अन्नादूरै मुख्यमंत्री बन गए किंतु 1969 में अन्नादुरै की मृत्यु के कारण करुणानिधि मुख्यमंत्री बने तथा दल के भी अध्यक्ष और संरक्षक बन बैठे ।करुणानिधि की इस एकाधिकार प्रवृत्ति के कारण एम जी रामचंद्रन ने एक नए दल का गठन कर लिया। तमिलनाडु में राजनीतिक के दो धड़े सदैव विद्यमान रहे

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.57
Volume 4, Issue 6, November 2024

चाहे वह पेरियार और अन्नादुरई के रूप में रहा हो या चाहे करूनानिधि और रामचंद्रन व जयललिता के रूप में रहा हो। जयललिता के निधन से तमिलनाडु की राजनीति में एक धडे का स्थान पहले ही रिक्त हो गया था किंतु करुणानिधि की मृत्यु ने द्रविड़ राजनीति में एक रिक्तता उपस्थित कर दिया। उनकी पहचान संघर्षशील तर्कवादी लेखक और कुशल वक्त के रूप में थी । उन्होंने 14 वर्ष की आयु में राजनीति में प्रवेश कर राजगोपालाचारी द्वारा स्कूलों में हिंदी भाषा को अनिवार्य करने के आदेश के विरुद्ध आंदोलन में भाग लेकर अपने को लोकप्रिय बनाया 1967 में भी करुणा निधि हिंदी का विरोध करते हुए स्टेशन पर अंकित नाम को मिटाकर रेल पटरी पर समर्थकों के साथ लेटकर रेलगाड़ी के मार्ग को अवरोध कर दिया।

ऐसे ही संघर्षशील व्यक्तित्व के कारण करुणानिधि 13 बार चुनाव लड़े और बिना पराजित हुए पांच बार मुख्यमंत्री बने ।करूणानिधि का दृष्टिकोण स्पष्ट था इसीलिए तमिलनाडु के विकास के लिए तमिल को ही उपयुक्त मानते थे। उनका मानना था कि हिंदी को प्राथमिकता प्रदान करने का तात्पर्य उत्तर भारतीयों की प्रभुता स्वीकारना है।

इन सब का अर्थ यह कतई नहीं है कि करुणानिधि राष्ट्रवादी नहीं थे ।करुणानिधि पेरियार के विपरीत अन्नादुरई के साथ तमिलनाडु राज्य की मांग भारत गणतंत्र में किया। करुणा निधि भारतीय राजनीति एवं समाज को अच्छी तरह समझते थे यही कारण है कि बैंकों के राष्ट्रीयकरण का जहां समर्थन किया वहीं राष्ट्रीय आपातकाल की घोर आलोचना करते हुए जेपी के कंधे से कंधा मिलाकर दिल्ली में जन्म मोर्चा की सरकार का गठन करवा दिया ।उन्ही के प्रयासो व संघर्षों का परिणाम था कि बी पी सिंह ,देवगौड़ा और ए के गुजराल प्रधानमंत्री बने जबकि उन लोगों का केंद्रीय राजनीति में कोई विशेष स्थान नहीं रहा। द्रविड परंपरा का पालन करते हुए वह यू पी ए के संस्थापक सदस्य होते हुए उसकी सरकार में अपना प्रभाव कायम रखा।

रामसेतु मामले में राम के अस्तित्व पर प्रश्न पर खड़ा किया और पूछा कि किस इंजीनियरिंग कॉलेज के राम छात्र थे ? इस प्रकार जनमानस में अपने को पेरियार का अनुयाई स्पष्ट करने में सफल रहे । जहां करुणा निधि

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.57
Volume 4, Issue 6, November 2024

ने अपने को पेरियार का शिष्य और दर्शन स्वीकार करने वाला बताया वही रामचंद्रन और जयललिता ने भी पेरियार में पूरी आस्था व्यक्त किया।

2014 में जब संस्कृत सप्ताह मनाने का आदेश आया तो जयललित ने घोर आपत्ति प्रकट किया वह अपने व्यक्तित्व से केंद्र की राष्ट्रीय सरकार को प्रभावित कर लेती थी। जयललिता की मृत्यु तथा शशि कला को कारावास की सजा ने ए डी एम के को आंतरिक रूप से तीन गुटों में बांट दिया। इस प्रकार जयललिता और करुणानिधि जैसे करिश्माई व्यक्तित्व के निधन से द्रविड़ राजनीति विधवा जैसे हो गई डीएमके के कार्यकारी अध्यक्ष स्टालिन राजनीतिक संगठन को मजबूत करते हुए दिखाई पड़ते हैं लेकिन करुणा निधि जैसी दूरदर्शिता और प्रभावशीलता का अभाव महसूस होता है। यू लगता था की रजनीकांत द्रविड़ राजनीति में एक मुख्य अभिकर्ता के रूप में उभर कर आएंगे और पूरी राजनीति को अपने इर्द-गिर्द समेट लेंगे किंतु ऐसा होता हुआ दिखाई नहीं पड़ता है तथा उनके अंदर द्रविड़ राजनीति के मूल तत्वों को प्रभावित करने की भी करुणा निधि जैसी क्षमता दिखाई नहीं पड़ती।

संदर्भ सूची -

1. ढील, अनीता. पेरियार ई.वी. रामास्वामी: अ स्टडी ऑफ़ द इन्फ्लुएंस ऑफ़ अ पर्सनैलिटी इन कंटेम्पररी साउथ इंडिया. स्कैंडिनेवियन यूनिवर्सिटी बुक्स, 1977, पृ 24-30.
2. हार्डग्रेव, रॉबर्ट एल. द द्रविडियन मूवमेंट. पॉपुलर प्रकाशन, 1965, पृ 32.
3. बार्नेट, मार्गरेट रॉस. द पॉलिटिक्स ऑफ़ कल्चरल नेशनलिज्म इन साउथ इंडिया. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1976, पृ 60-65.
4. गुहा, रामचंद्र. इंडिया आफ्टर गांधी: द हिस्ट्री ऑफ़ द वर्ल्ड्स लार्जेस्ट डेमोक्रेसी. मैकमिलन, 2007, पृ 392-395.
5. सुब्रमण्यम, नरेंद्र. एथ्निसिटी एंड पॉपुलिस्ट मोबिलाइजेशन: पॉलिटिकल पार्टीज इन साउथ इंडिया. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999, पृ 145.

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.57
Volume 4, Issue 6, November 2024

6. पांडियन, एम. एस. एस. द इमेज ट्रैप: एम.जी. रामचंद्रन इन फिल्म एंड पॉलिटिक्स. सेज पब्लिकेशन्स, 1992, पृ 48-52.
7. वेंकटचलपति, ए. आर. इन दोज़ डेज़ देयर वाज़ नो कॉफ़ी: राइटिंग्स इन कल्चरल हिस्ट्री. योडा प्रेस, 2006, पृ 78.
8. "एम. करुणानिधि: अ लाइफ इन पॉलिटिक्स." द हिन्दू, 7 अगस्त 2018, डब्लू डब्लू डब्लू. दहिन्दू.कॉम.
9. चंद्रा, बिपन. इन द नेम ऑफ़ डेमोक्रेसी: जेपी मूवमेंट एंड द इमरजेंसी. पेंग्विन बुक्स, 2003, पृ 112-115.
10. हसन, जोया. पार्टीज एंड पार्टी पॉलिटिक्स इन इंडिया. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002, पृ 210-215.
11. प्रेस ट्रस्ट ऑफ़ इंडिया. "करुणानिधि स्टर्स अप राम सेतु रो." द टाइम्स ऑफ़ इंडिया, 16 सितम्बर 2007.
12. "जयललिता ऑब्जेक्ट्स टू संस्कृत वीक इन स्कूल्स." द इंडियन एक्सप्रेस, 18 जुलाई 2014.